अमरूद की अतिसघन खेती/ मीडो बागवानी

अशोक कुमार[1] , ईश्वर सिंह[1] अंकित सती[2]
उद्यान विभाग[1] ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग[2] ,
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय,श्रीनगर, उत्तराखंड
ashokkumarnduat@gmail.com , eshunegi15023@gmail.com ,ankitsatihnbgu@gmail.com

अमरुद मायर्टेसी परिवार से संबधित एक व्यवसायिक रूप से महत्वपूर्ण फसल है। भारत का विश्व में फल उत्पादन में चीन के बाद द्वितीय स्थान है भारत में विभिन्न अनुसंधान संस्थानों द्वारा किए गए प्रयोगों से सिद्ध हुआ है।किसान बागवानी प्रतिइकाईक्षेत्र फल उत्पादकता बढ़ाने में सक्षम है।किसानों का ध्यान उत्पादन से उत्पादकताए वं लाभ की ओर हुआ है।सघन बागवानी या मीडो प्रणाली के अंतर्गत पौधरोपण कम दूरी पर करते हैं। नए प्रचलन में सघन बागवानी के साथ-साथ पौधों को छोटा कर देने की प्रक्रिया बागवानी में लाभ प्रदान करती है।

पौधों की कैनोपीया आकर में परिवर्तन कर छोटे या बौनी आकार वाले पेड़ के फलों की बागवानी की आधुनिक पद्धति को मीडो बागवानी की संज्ञा दी है।पौधों की कैनोपी में सूर्य की रोशनी का वितरण नई पत्तियां की संख्या में वृद्धि करताहै।यह प्रकाश संश्लेषण की क्रिया को बढ़ावा देता है।जिससे प्रतिइकाई क्षेत्र में उच्च उत्पादन की प्राप्ति होती है।

सघन बागवानी का उद्देश्य उपलब्ध संसाधनों जैसे

भूमि,जल,सौर ऊर्जा और उर्वरकों कान्यायसंगत उपयोग करते हुए फल उत्पादन मेंनियमित और टिकाऊ लाभ प्राप्तकरना है। अमरूद के पौधों लगाने की यह नवीन पद्धति अमरुद उद्योग में उत्पादन एवं श्रमलागत में कमी लाते हुए उत्पादकता बढ़ाना है।

अतिसघनखेती

अतिसघन खेती का अर्थ है कम जगह में अधिक पौधे लगाना ताकि प्रति हेक्टेयर अधिक उत्पादन हो सके।इसमें पौधों के बीच की दूरी कम होती है।औरआधुनिक तकनीकों जैसे छंटाई वसंरक्षित सिंचाई प्रणाली का उपयोग किया जाता है।

मीडोबागवानी

मीडोबागवानी में अमरूद के पौधों को घनीकतारों में लगाया जाता है और पौधों को झाड़ी के रूप में विकसित किया जाता है, जिससे अधिक संख्या में फल लगते हैं।इस तकनीक में उच्च उत्पादन देने वाली किस्मों का चयन और नियंत्रित पोषण प्रबंधन किया जाता है

उपयुक्त किस्में-

बड़े और आकर्षक फलों के लिए उपयुक्त (इलाहाबादी सफेदा), उच्च गुणवता व मीठे के लिए प्रसिद्ध (लखनउ-49), लाल गूदा के फलों के लिए (ललित), निर्यात के लिए ताइवान पिंक, और पूसा सृजन, सघन बागवानी के अंतर्गत निम्न कृषि क्रियाएं करते हैं-

1. पौधों के लिए रेखांकन करना।
2. गड्ढे खोदना।
3. गड्ढों का मिश्रण तैयार करना ।
4. गड्ढों को भरना।
5. पौधरोपण पौधों को निश्चित ऊंचाई पर निश्चित अंतराल पर काटना।
6. 3-4 मुख्य शाखाएं रखना।
7. नई शाखाओं की तीन - चार माह बाद कटाई करना।
8. द्वितीय वर्ष पून: कटाई करना।
9. दो वर्ष पश्चात वर्ष में दो बार कटाई -छटाई करना (जनवरी- फरवरी या मई - जून माह)

विभिन्न पौधरोपण दूरी पर संस्तुत पौधों की संख्या प्रति है-

3.0 मी. पंक्ति से पंक्ति ग 1.5 मी. पौधे से पौधा - 2222 पौधे/हेक्टेयर।

3.0 मी. पंक्ति से पंक्ति ग 3.0 मी. पौधे से पौधा - 1111 पौधे/है।

6.0 मी. पंक्ति से पंक्ति ग 3 मी. पौधे से पौधा - 555 पौधे/है।

परंपरागत दूरी 6.0 मी. पंक्ति से पंक्ति ग 6.0 मी. पौधे से पौधा - 278 पौधे/है।

जलवायु एवं भूमि-

उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र वाला फल है। अमरूद को लगभग हर प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। तथा उसर तथा रेतीली भूमियों के लिए बहुत अच्छा वृक्ष है। परंतु गुणवतापूर्ण उत्पादन के लिए उपजाउ बालू दोमट भूमि अच्छी रहती है।

इलाहाबाद सफेदा, पूसा सृजन, हिसार सुर्ख,श्वेता, ललित, लखनउ 49, पंत प्रभात, अर्का मृदुला, अर्का अमूल्य, CISH G - 1 , 2, MPUAT selection - 1,2 2

पौधरोपण –

मई- जून माह में 0.6 ग 0.6 ग 0.6 सेंटीमीटर आकर के गड्ढे खोदकर तैयार करते हैं। गड्ढों का आकार छोटा रखते हैं गड्ढों को 15 से 20 दिन तक खुला रखते हैं। सड़ा हुआ गोबर की खाद 30 किलोग्राम, 50 ग्राम (कीटनाशक चूर्ण) क्यूनालफास, 1.5 % कीटनाशक चूर्ण का, 500 से 1000 ग्राम नीम की खली, 1.0 किलोग्राम सिंगल सुपरफास्ट, 5 किलोग्राम जिप्सम प्रति गड्ढा मिश्रण तैयार करते हैं।

मुख्य तने से 60 सेंटीमीटर ऊंचाई पर काटा जाता है। इस ऊंचाई पर तीन चार शाखों को बढ़ाने दिया जाता है। इसके बाद नई शाखांए निकालने के बाद लगभग तीन-चार दिन माह बाद उसमें पुनः कटाई करते है। पुनः एक बार तीन चार माह बाद कटाई करते है। द्वितीय वर्ष पुणे में दो बार कटाई छटाई करते है। अमरूद में फूड तथा फल नई वृद्धि पर ही लगते हैं। तीसरे वर्ष जनवरी तथा मैं जून में फल प्राप्त करने के आधार पर कटाई करते हैं।

खाद एवं उर्वरक प्रबंधन –

वर्षा ऋतु की फसल लेने के लिए FYM,SSP,MOP की पूरी मात्रा तथा यूरिया की आधी मात्रा दिसंबर माह में तथा शेष मात्रा मार्च अप्रैल में देनी चाहिए सर्दी की फसल के लिए FYM, SSP,MOP की पूरी मात्रा तथा यूरिया की आधी मात्रा जून माह में तथा शेष मात्रा सितंबर माह में देनी चाहिए ऋतु की फसल में कीट रोगों का संक्रमण कम लगता है।

पंतनगर विश्वविद्यालय में किए गए परीक्षणों के आधार पर निम्र तालिका के आधार पर पौधों को खाद एवं उर्वरक दिए जाने चाहिए –

पौधों की आयु (वर्ष)	गोबर की खाद (किग्रा.)	नाइट्रोजन (ग्रा.)	फास्फोरस (ग्रा.)	पोटाश (ग्रा.)
1	10	75	65	50
2	20	150	130	100
3	30	225	195	150
4	40	300	260	200
5	50	375	325	250
6 वर्ष और अधिक	60	450	400	300

उपज-

यद्यपि 3 वर्ष में अमरूद के पेड़ों से सामान्यतः 75 से 100 फल प्रति पेड मिलना शुरू हो जाता है। तथा 6 वर्ष पश्चात अमरूद के पूर्ण विकसित पेड़ से वर्ष भर में 100-125 किलो ग्राम प्रति पेड़ तक उपज मिल जाती है। शरद ऋतु में अमरूद के फलों को अखबार के कागज में लपेटकर या लकड़ी की पेटी में भरकर दूर के बाजारों में भेजकर अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

निष्कर्ष-

अमरूद की अतिसघन खेती (मीडो बागवानी) किसानों के लिए एक क्रांतिकारी तकनीक है।इससे कम समय में अधिक उत्पादन और मुनाफा संभव है।यदि वैज्ञानिक तरीकों को अपनाया जाए, तो यह भारत में फलों की खेती का भविष्य बन सकता है।

1st year　　2nd year

सन्दर्भ-

कृषि विज्ञान कें द्रवन स्थली विद्यापीठ टोंक 304022।

कृषि विज्ञान के नगीना बिजनौर।

एचपी शिवा परियोजना उद्यान विभाग नवबहार, शिमला-171002 हिमाचल प्रदेश।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) - "अमरूद उत्पादन तकनीक", राष्ट्रीय बागवानी अनुसंधान एवं विकास प्रतिष्ठान। नेशनलहॉर्टिकल्चरबोर्ड (NHB) - अमरूद की खेती पर विस्तृत मार्गदर्शिका।

डॉ. एस. के. सिंहएवंटीम - "अतिसघन खेती प्रणाली: एक नवीन तम दृष्टिकोण", भारतीय बागवानी पत्रिका, 2022।

के.वी.के. (कृषि विज्ञान केंद्र) रिपोर्ट - अमरूद की उच्च घनत्व वाली खेती पर फील्ड परीक्षण रिपोर्ट।

केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान] लखनऊ उत्तर प्रदेश।